RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

महाभारतकालीन शिक्षा व्यवस्था

डॉ0 रमा कुमारी

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

'चतुराश्रम' में ब्रह्मचर्य के विषय में कहा गया है। ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचारी को विद्याध्ययन करना पड़ता था। शास्त्रविद्या व शस्त्रविद्या के सम्बन्ध में हम इस प्रकरण में चर्चा करेंगे, क्योंकि महाभारत में केवल इन दोनों प्रकार की शिक्षा–पद्धति ही प्रदर्शित हुई है। दूसरी विद्याओं की शिक्षा इस प्रबंध के लिए आलोच्य नहीं है।

प्रत्येक विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य व्रत का सहारा लेना पड़ता था। ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ हम इस रूप में ले सकते हैं– मन–प्राण में उच्च भावों का पोषण करना, शुभ चिन्तन से शरीर व मन को क्रमशः उन्नतिशील बनाना, समस्त बुराईयों से अपनी रक्षा करके उन्नति की चेष्टा करना ही ब्रह्मचर्य हैं मन के स्थिर संकल्प को व्रत कहा गया है। ब्रह्मचर्य को अपना लक्ष्य मानकर विद्यार्थी को साधना करनी पड़ती थी। बहुत कष्टों द्वारा कठोर संयम से शरीर व मन को उपदेश ग्रहण के उपयोगी बनाने की व्यवस्था थी।

शिक्षा के दो नियम थे। कोई गुरू के घर जाकर शिक्षा ग्रहण करता था और किसी–किसी परिवार में गृह–शिक्षक रखने की व्यवस्था भी थी। दूसरी व्यवसथा सम्भवतः धनी परिवारों तक ही सीमित थी, वह भी सब धनी परिवारों में नहीं। इस विषय पर आगे प्रकाश डाला जायेगा।

विद्यार्थी बाल्यकाल में ही अध्ययन शुरू करते थे। गार्हथ्य अवलम्बन से पहले ययाति ने कहा है– ''ब्रह्मचर्य की सहायता से मैंने समग्र वेदों का अध्ययन कर लिया है।'' भीष्म ने अपने शैशवकाल में ही वशिष्ठ के पास वेदों का अध्ययन कर लिया था। धृतराष्ट्रादि का वेदाध्ययन उपनयन के बाद ही शुरू हो गया था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि ब्राह्मण बाल का पाँच वर्ष से आठ के, क्षत्रिय का दस से ग्यारह के और वैश्य का ग्यारह से बारह साल के अंदर गुरू–गृह जाने का काल था। इसी उम्र में ब्राह्मणादि का उपनयन संस्कार होता था। शूद्र का उपनयन संस्कार नहीं होता था। शूद्र का उपनयन संस्कार नहीं होता था किन्तु बारह–तेरह वर्ष की उम्र में सम्भवतः शूद्र संतान का भी विद्यारम्भ हो जाता था।

ब्राह्मणादि तीन वर्णों की शिक्षा की बात तो हर जगह मिलती है। शूद्रागर्भजात महामति विदुर का ज्ञान भी अतुलनीय था। वे सर्वशास्त्रों के पंडित थे। सूतजातीय लोमहर्षण, संजय एवं सौति भी कम ज्ञानी नहीं थे। सौति महाभारत के प्रचारक थे। ये लोग सब शास्त्रों के ज्ञाता थे, वेदपाठ न करने पर भी पुराणादि की सहायता से वेदादि के मर्म के अभिज्ञ थे। युधिष्ठिर ने युयुत्सु को हस्तिनापुर की रक्षा के लिए नियुक्त किया था। निश्चय ही अज्ञानी के स्कंधों पर इतना बड़ा दायित्व नहीं डाला जा सकता था। युद्धिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में जब लोगों को निमंत्रित करने के लिए दूत भेजा गया तो उससे कहा गया था ''मान्य शूद्रों को भी निमंत्रित करना''। शायद विद्वान्, पारंगत व्यक्ति को ही ''मान्य'' कहा जाता था। राजा को अमात्य नियुक्त करता था। उनमें भी तीन शूद्रों की नियुक्त करना पड़ता था। जैसे तैसे व्यक्ति को अमात्य रूप में नियुक्त करने से राजकाज नहीं चल सकता यह सभी समझ सकते हैं।

वेद, अंधवीक्षिकी (तर्कविद्या), वार्त्ता (कृषि, वाणिज्य आदि) व दंडनीति शिक्षणीय विषय माने जाते थे। सब विद्यार्थी सब विद्याओं को पढ़ते थे ऐसी बात नहीं थी। कोई–कोई एक, कोई एक से अधिक विद्या का अध्ययन करते थे। युक्तिशास्त्र, शब्दशास्त्र, गांधर्वशास्त्र, (नृत्यगीतादि), पुराण, इतिहास, आख्यान एवं कलाविद्या भी शिक्षणीय विषयों में गण्य थे।

हस्तिसूत्र, अश्वसूत्र, रथसूत्र, धनुर्वेद, यंत्रसूत्र (आग्नेय औषधियों की सहायता से सीसा, काँसा व पत्थर से निर्मित गोले को फेंकने वाली लोहे की नली को नीलकंठ ने यंत्र कहा है। जिस ग्रंथ में यंत्र व्यवहार से सूत्र या नियमप्रणाली लिखी हो वही यन्सत्रसूत्र कहलाता था। नीलकंठ के लिखने के ढंग से लगता है कि यन्त्र शब्द से वह बन्दूक समझाना चाहते हैं, यह ठीक है कि नहीं विचारणीय विषय है।) एवं नागरशास्त्र (नगर के हितकार्यों की ज्ञानजनक विद्या) राजाओं के लिए विशेष रूप से ज्ञातव्य थे।

कोई–कोई अपभ्रंश भाषा में भी पांडित्यलाभ करता था। सम्भवतः भिन्न देशीय लोगों के सम्पर्क में आकर बुद्धिमान व्यक्ति विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता हो जाते थे। पांडवों ने जब कुंती के साथ वातावरण की ओर प्रस्थान किया था, उस वक्त

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विदुर ने युद्धिष्ठिर को भविष्य में आने वाली विपत्ति से सावधान करते हुए कौशल से जो उपदेश दिया था, वह भाषा युद्धिष्ठिर के अलावा और कोई नहीं समझ पाया था। विदुर ने क्या कहा था वह बाद को कुन्ती ने युधिष्ठिर से पूछा था।

महाराज युधिष्ठिर की राजसभा में गुणियों को बहुत आदर सम्मान दिया जाता था। विभिन्न भाषाओं के पंडित भी राजसभा में सम्मानित किये जाते थे एवं राजकोष से आर्थिक सहायता पाकर राजसभा की श्रीवृद्धि करते थे।

इस काल के समाज में वेदचर्चा का आधिपत्य था। सब ब्राह्मणों को वेदपाठ करना पड़ता था। स्वाध्याय या वेदपाठ की नित्यता कही हुई है, अर्थात् द्विजाति को प्रतिदिन वेदपाठ करना चाहिए, नहीं करने से वह पाप का भागी होता है। वेद–वेदान्तों की व्यापकता का वर्णन करने में महर्षि ने दो बातें अस्वाभाविक कही हैं, एक तो शक्तिपुत्र की वेदावृत्ति और दूसरी पिता की शास्त्र व्याख्या में कहोड़पुत्र अष्टावक्र का दोष निकालना। दोनों वेदज्ञ इस वक्त मातृगर्भ में थे। इन दोनों बातों की सत्यता पर विश्वास नहीं होता। रूपक की सहायता से शायद शास्त्रचर्चा की व्यापकता प्रदर्शित की गई है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची :–

1. सुखमय भट्टाचार्य : महाभारतकालीन समाज
2. उत्तरकांड
3. द्रोण 25वाँ अध्याय
4. अश्व 75वाँ अध्याय
5. वन 232वाँ अध्याय

RRIJM 2015, All Rights Reserved